IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 12, May 2023

बालक एवं सामाजिक पर्यावरण एक अध्ययन

डॉ.कमलकिशीर बापूराव इंगोले
सहायक- प्राध्यापक(समाजशास्त्र)
रा.सु बीडकर महाविद्यालय हिंगनघाट जि.वर्धा.
sarika.kishor@gamil.com

वातावरण' के लिए 'पर्यावरण' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है- 'परि + आवरण'। 'परि' का अर्थ है- 'चारों ओर' एवं 'आवरण' का अर्थ है-'ढकने वाला'। इस प्रकार पर्यावरण या वातावरण वह वस्तु है जो चारों ओर से ढके हुए है। अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के चारों ओर जो कुछ है, वह उसका वातावरण है। इसमें वे सभी तत्व सम्मिलित है, जो मानव के जीवन व व्यवहार को प्रभावित करते हैं। सामाजिक परिवर्तन, समाज के आधारभूत परिवर्तनों पर प्रकाश डालने वाला एक विस्तृत एवं कठिन विषय है। इस प्रक्रिया में समाज की संरचना एवं कार्यप्रणाली का एक नया जन्म होता है। इसके अन्तर्गत मूलतः प्रस्थिति, वर्ग, स्तर तथा व्यवहार के अनेकानेक प्रतिमान बनते एवं बिगड़ते हैं। समाज गतिशील है और समय के साथ परिवर्तन अवश्यंभावी है।सामाजिक परिवेश में सांस्कृतिक पहलू भी शामिल हैं। हम कैसे व्यवहार करते हैं क्योंकि उपभोक्ता मूल्यों, विश्वासों, दृष्टिकोणों, रीति-रिवाजों और मानदंडों और जीवन शैली पर निर्भर करते हैं? ये बल क्या, क्यों, कहाँ, कैसे और कब लोगों को उत्पादों और सेवाओं को खरीदने के लिए प्रभाव डालते हैं।

संदर्भ:(References)

1) इरविंग गोफमैन, रिलेशंस इन पब्लिक (1972) पृ. २९६
2) पीटर वॉर्स्ली संस्करण में उद्धृत, द न्यू मॉडर्न सोशियोलॉजी रीडिंग्स (1991 पी. 17
3) पी. हैमिल्टन एड., एमिल दुर्खीम: क्रिटिकल असेसमेंट, खंड (1990 पृष्ठ. 385-6
4) एमिल दुर्खीम, द एलीमेंट्री फॉर्म्स ऑफ़ द रिलिजियस लाइफ़ (1971 पृ. 227
5) जॉन ओ'नील, सोशियोलॉजी ऐज़ ए स्किन ट्रेड (1972 पृष्ठ. १७४-५
6) जॉर्ग दुर्शमिड्ट, एवरीडे लिविंग इन द ग्लोबल सिटी (2000 पृ. 47
7) हेनरी एलेनबर्गर,द डिस्कवरी ऑफ द अनकांशस (1970 पी. 380-1
आर. स्किनर/जे. क्लीज़, फैमिलीज़ एंड हाउ टू सर्वाइव देम (199394